कुलगीत

कला-संस्कृति, सर्वज्ञान की,
बहे जहां विद्या-धारा।
प्रथम केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
स्थापित बिहार में न्यारा।।

सतत ज्ञान-विज्ञान की सीमा,
का सम्बर्धन लक्ष्य हमारा।
जिससे हो मानव विकास नित,
समता का समाज हो प्यारा।।

बने विचारों के विमर्श की,
सदा स्थली विश्वविद्यालय।
मानवीय मूल्यों-संबंधों,
के सर्जन को सदा संवारा।।

अक्षुण्ण रखते हुए प्रकृति को,
मानव विकास ऊंचाई पाये।
निर्धनता किसी को न रोके
निष्ठा सत्य लक्ष्य चमकाये।।

अपनी मेहनत अदभुत सपना,
राह गगन में नई बनायें।
पारदर्शिता से हम इसको,
धरती पर पहचान दिलायें।।

सर्वधर्म की भूमि यहीं पर,
जिसने जीवन-मूल्य निखारा।
नव जागरण ज्ञान की गरिमा,
बढ़े शोध-संस्कृति क्रम न्यारा।।

रचयिता - डॉ. हरिप्रसाद दुबे